B.A. (Part - 3)
Paper - VI

Page No.:
Date: / /

जापान के अर्थव्यवस्था में कुटीर एवं लघु उद्योग का महत्व।

लघु एवं कुटीर उद्योग-धंधों के क्षेत्र में जापान विश्व में सर्वोच्च शिखर पर विद्यमान है। लघु स्तरीय उद्योग-धंधों में जापानियों की कुशलता सदा से विश्वविख्यात रही है। उद्योग-धंधे प्राचीन काल में तो जापानी अर्थव्यवस्था के मुख्य आधार थे ही, किन्तु आज भी आर्थिक क्षेत्र में इनका महत्वपूर्ण स्थान है। जहाँ भारत में आधुनिक औद्योगिक प्रगति प्राचीन कुटीर उद्योगों के ह्रास के साथ आरम्भ हुई, वहीं जापान में उपस्थित औद्योगिक क्रांति दो ओर से बढ़ी। एक तरफ तो यह जापान में पश्चिमी यूरोप की विशाल स्तरीय उत्पादन व्यवस्था लायी तथा दूसरी ओर इसमें लघु व्यवसाय को जो जापान में सामन्तवादी काल से विद्यमान था, क्रांतिमय बना दिया। आज भी जापान के विशाल औद्योगिक साम्राज्य की नींव लघु एवं कुटीर उद्योगों पर टिकी है। सस्ते श्रम एवं विद्युत की उपलब्धि, परिवहन एवं संचार सुविधाओं का विस्तार, विशालस्तरीय उद्योगों की सहयोगी भावना तथा सरकारी प्रोत्साहन के कारण जापान के लघु एवं कुटीर उद्योग समृद्ध बने हुए हैं।

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री फ्री चीर एवं प्रचान के शब्दों में, "1938 में जापान में 92.6 प्रतिशत कारखानों में 5 से 100 तक व्यक्ति संलग्न थे। जापान का मानानुसार 60.6 प्रतिशत तथा मूल्यानुसार 57.1 प्रतिशत निर्यात इन्हीं मध्यम एवं लघु आकार वाले उद्योगों से प्राप्त होता था। जापानी अर्थव्यवस्था के विश्लेषण (Lock Wood) के अनुसार, "1930 में जापानी अर्थव्यवस्था के निजी क्षेत्रों में 665,533 स्वतन्त्र संस्थान थे, जिनमें 14 प्रतिशत औद्योगिक काम शक्ति संलग्न थी। 2,106,660 संस्थानों में से प्रत्येक में एक से लेकर 4 तक व्यक्ति संलग्न थे। इन लघु संस्थानों में कुल मध्य प्रतिशत औद्योगिक काम शक्ति संलग्न थी। 989,465 मध्य आकार वाले संस्थान से, जिनमें कुल 20.8 प्रतिशत औद्योगिक काम शक्ति संलग्न थी। 100 से लेकर 499 तक व्यक्तियों को काम देने वाले 505,510 विशाल स्तरीय संस्थानों में कुल 10.6 प्रतिशत औद्योगिक काम शक्ति संलग्न थी। 500 से अधिक व्यक्तियों को काम देने वाले 499,761 संस्थानों में कुल 10.3 प्रतिशत औद्योगिक कार्मिक संलग्न थे। जैसा कि 'चमन लाल' ने व्यक्त किया है, "विश्वास कीजिए अथवा नहीं, जापान के विशाल औद्योगिक साम्राज्य की शक्ति मुख्यतः तथाकथित लघु उद्योगों के कारण है जिनमें 54 प्रतिशत एक-व्यक्ति कार्यशालाएँ एवं 50 प्रतिशत लघु कारखाने सम्मिलित

है जिनमें 5 से भी कम श्रमिकों द्वारा काम किया जाता है। श्री चमन लाल को भारतीय सरकार ने जापानी लघु उद्योगों का अध्ययन करने के लिए जापान भेजा था।

जापानी अर्थव्यवस्था में लघु एवं कुटीर उद्योगों का यह महत्व द्वितीय महायुद्ध से कुछ पूर्व तक बना रहा। इण्डो-जापानी बिजनेस डाइरेक्ट्री के अनुसार 1937 में रोजगार में लगे व्यक्तियों के अनुसार फैक्ट्रियों का वितरण निम्नानुसार था :-

प्रति इकाई काम करने वाली की संख्या	कुल फैक्ट्रियों की प्रतिशत
5 से अधिक और 30 से कम	86.3
30 से अधिक और 100 से कम	10.1
100 से अधिक	3.6
	कुल योग = 100.00

जापान के आर्थिक विकास में इन उद्योगों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन सभी क्षेत्रों में जहां वस्तुओं का उत्पादन कम पूँजी परक रीतियाँ अपनाकर सम्भव है, उत्पादन कार्य आज भी लघु इकाइयों के हाथ में है।

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

निष्कर्ष :-

लघु और वृहत् दोनों उद्योग जापान की आर्थिक गाड़ी के दो पहिये थे जिन्होंने मिलकर देश की औद्योगिक क्रांति को आगे बढ़ाया। किन्तु इनका अभिप्राय यह नहीं है कि छोटे उद्योगों के विकास में कोई बाधा ही नहीं आयी। वास्तव में इन उद्योगों को अपनी ही श्रेणी के उद्योगों की आंतरिक प्रतियोगिता का सामना करना पड़ा। ये प्रतियोगितात्मक समस्याएँ अधिकांश लघु एवं मध्यम आकार के जापानी उद्योगों के सामने बनी रहीं। बड़े पैमाने के उद्योगों के सहायक रूप में काम करते रहें। वास्तव में जापानी अर्थव्यवस्था में ये दोनों ही क्षेत्र एक दूसरे के सहयोगी रहें और उन्होंने देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया।

समाप्त

धन्यवाद

Scanned with CamScanner